खाद्य संसाधनों में सुधार

परिचय

भोजन जीवन की मूलभूत आवश्यकताओं में से एक है। बढ़ती जनसंख्या के कारण खाद्य उत्पादन बढ़ाना आवश्यक हो गया है। इसके लिए कृषि और पशुपालन में वैज्ञानिक तकनीकों का उपयोग किया जाता है। इस अध्याय में फसल उत्पादन, पशुपालन तथा खाद्य संसाधनों के संरक्षण एवं सुधार के विभिन्न उपायों का अध्ययन किया गया है।

फसल किस्म सुधार

बेहतर फसलों का विकास

फसल किस्म सुधार का उद्देश्य अधिक उत्पादन तथा बेहतर गुणवत्ता वाली फसलें विकसित करना है।

मुख्य उद्देश्य हैं—

- अधिक उपज
- बेहतर गुणवत्ता
- रोग एवं कीट प्रतिरोधक क्षमता
- सूखा, बाढ़ तथा लवणता सहन करने की क्षमता
- शीघ्र परिपक्वता
- विभिन्न जलवायु के अनुकूलता

नई किस्मों का विकास संकरण (Hybridization) और पादप प्रजनन द्वारा किया जाता है।

फसल उत्पादन प्रबंधन

उत्पादन बढ़ाने के उपाय

फसल उत्पादन बढ़ाने के लिए पोषक तत्वों, सिंचाई तथा उचित कृषि प्रबंधन की आवश्यकता होती है।

पोषक तत्व प्रबंधन:

पौधों को वृद्धि के लिए आवश्यक पोषक तत्व चाहिए।

मुख्य स्रोत हैं—

- गोबर की खाद (Manure)
- उर्वरक (Fertilizers)
- जैव उर्वरक (Biofertilizers)

सिंचाई:

फसलों को समय-समय पर पानी उपलब्ध कराना सिंचाई कहलाता है।

आधुनिक विधियाँ—

- ड्रिप सिंचाई
- स्प्रिंकलर सिंचाई

फसल प्रणाली (Cropping Patterns)

फसल उगाने की विधियाँ

उत्पादन बढ़ाने के लिए किसान विभिन्न फसल प्रणालियाँ अपनाते हैं।

- **मिश्रित खेती (Mixed Cropping):** एक साथ दो या अधिक फसलें उगाना।
- **अंतरवर्तीय खेती (Intercropping):** अलग-अलग फसलों को निश्चित पंक्तियों में उगाना।
- **फसल चक्र (Crop Rotation):** एक ही खेत में क्रम से अलग-अलग फसलें उगाना।

इनसे मिट्टी की उर्वरता बनी रहती है तथा फसल खराब होने का खतरा कम होता है।

फसल सुरक्षा प्रबंधन

खरपतवार एवं कीट नियंत्रण

फसलों को खरपतवार, कीट तथा रोगों से बचाना आवश्यक है।

इसके लिए—

- खरपतवार हटाना या खरपतवारनाशी का प्रयोग।
- कीटनाशकों का सावधानीपूर्वक उपयोग।

- रोग प्रतिरोधी किस्मों का चयन।
- कटाई के बाद अनाज का सुरक्षित भंडारण।

पशुपालन

पशुओं का वैज्ञानिक प्रबंधन

पशुपालन घरेलू पशुओं के पालन, प्रजनन तथा देखभाल की वैज्ञानिक प्रक्रिया है।

इसमें शामिल हैं—

- गौपालन
- कुक्कुट पालन
- मत्स्य पालन
- मधुमक्खी पालन

उचित भोजन, स्वास्थ्य देखभाल तथा स्वच्छ वातावरण से उत्पादन बढ़ाया जा सकता है।

गौपालन एवं कुक्कुट पालन

दूध, मांस एवं अंडा उत्पादन

गौपालन मुख्यतः दूध उत्पादन तथा कृषि कार्यों के लिए किया जाता है।

कुक्कुट पालन में मुर्गियों का पालन अंडे और मांस प्राप्त करने के लिए किया जाता है।

अच्छी नस्ल, संतुलित आहार तथा रोग नियंत्रण उत्पादन बढ़ाने में सहायक होते हैं।

मत्स्य पालन एवं मधुमक्खी पालन

अन्य खाद्य संसाधन

मत्स्य पालन में मीठे तथा समुद्री जल में मछलियों का पालन किया जाता है।

मधुमक्खी पालन (एपिकल्चर) में शहद और मोम प्राप्त किए जाते हैं। मधुमक्खियाँ फसलों के परागण में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं।

सतत कृषि

प्राकृतिक संसाधनों का संरक्षण

सतत कृषि का उद्देश्य पर्यावरण को सुरक्षित रखते हुए खाद्य उत्पादन बढ़ाना है।

इसके अंतर्गत—

- उर्वरकों एवं कीटनाशकों का संतुलित उपयोग।
- जल एवं मृदा संरक्षण।
- जैविक खेती को बढ़ावा।
- पर्यावरण-अनुकूल कृषि पद्धतियों का उपयोग।

मुख्य बिंदु

- बढ़ती जनसंख्या के लिए खाद्य उत्पादन बढ़ाना आवश्यक है।
- बेहतर फसल किस्में अधिक उपज देती हैं।
- सिंचाई एवं पोषक तत्व प्रबंधन उत्पादन बढ़ाते हैं।
- फसल प्रणाली मिट्टी की उर्वरता बनाए रखती है।
- पशुपालन में गौपालन, कुक्कुट पालन, मत्स्य पालन तथा मधुमक्खी पालन शामिल हैं।
- सतत कृषि पर्यावरण संरक्षण के साथ खाद्य उत्पादन बढ़ाती है।

अध्याय सारांश

इस अध्याय में हमने खाद्य संसाधनों में सुधार के विभिन्न उपायों का अध्ययन किया। बेहतर फसल किस्में, आधुनिक कृषि तकनीक, उचित सिंचाई, फसल सुरक्षा तथा वैज्ञानिक पशुपालन से खाद्य उत्पादन बढ़ाया जा सकता है। साथ ही सतत कृषि प्राकृतिक संसाधनों के संरक्षण और भविष्य की खाद्य सुरक्षा के लिए अत्यंत आवश्यक है।